

183
696 (P)
11

MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi

1368
10/21

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No.

696

n

✓
201

Smt. H. C. Singh

18

११

20/10/30

* वन्देमातरम् *

राष्ट्रीय समर

जिसमें

चुनिन्दा चुनिन्दा राष्ट्रीय गाने हैं ।

एक दफा पढ़ने ही से दिल को
फड़का देने वाली कविताओं

का संग्रह

प्रकाशक व संप्रहकर्ता

के० एल० वर्मन

विशेश्वर गंज, बनारस सिटी ।

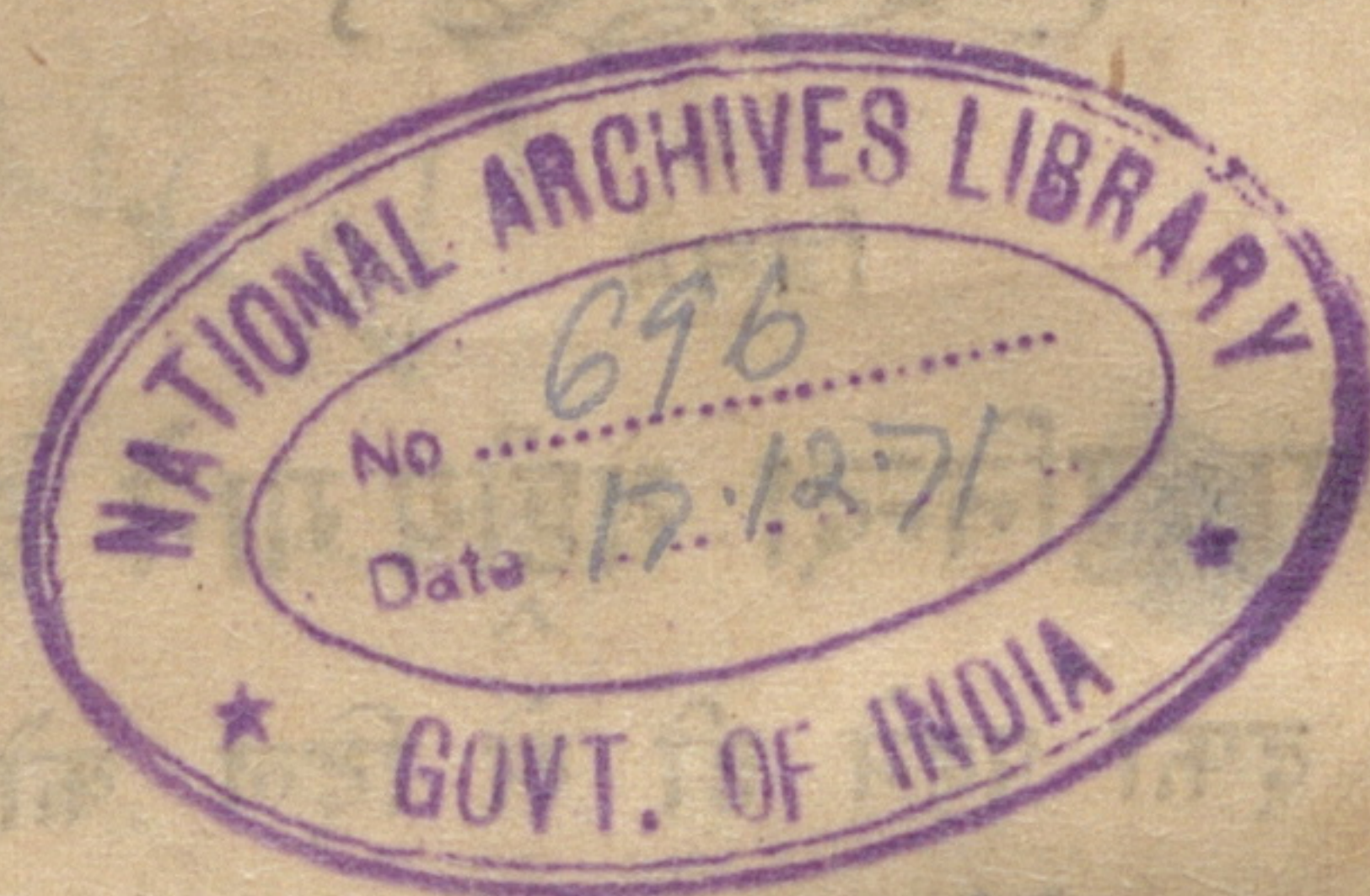
प्रथमावृत्ति]

सन १९३० ई०

मूल्य -)

सैकड़ा ४)

891.431
B 927A

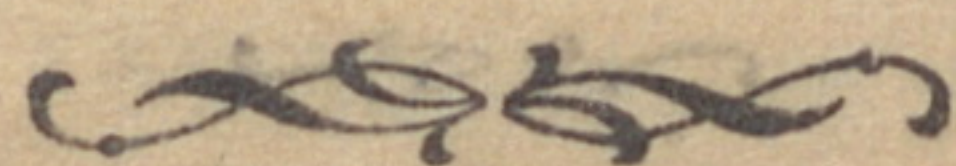


। तिमि त्रतात, तं त्रताति

(१) त्रतात (२) त्रताति (३) त्रताति (४) त्रताति



राष्ट्रीय समर



१-भण्डा ऊँचा रहे हमारा

प्रेमिक विश्व तिरंगा प्यारा ।

भण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

सदा ॥ शक्ति बरसानेवाला, प्रेम-सुधा सरसानेवाला,
वीरों को हरसानेवाला, मातृ-भूमि का तन-मन सारा ।

भण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर जोश बढ़े क्षण-क्षण में,
काँपें शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय संकट सारा ।

भण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

इस भण्डेके नीचे निर्भय, ले स्वराज्य वह अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा ।

भण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

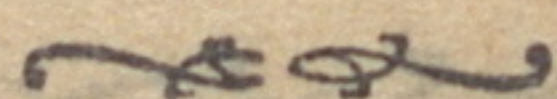
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ,
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा ।

भण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये,
विश्व मुक्त करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ।

भण्डा ऊँचा रहे हमारा ।

प्रेमिक विश्व तिरंगा प्यारा ॥



२-वन्देमातरम्

हम गरीबों के गले का द्वार वन्देमातरम् !

छीन सकती है नहीं सरकार वन्देमातरम् ॥

सर चढ़ोंके सर में चकर उस समय आता जरूर ।

कान में पहुँची जहाँ भनकार वन्देमातरम् ॥

हम वही हैं जो कि होना चाहिये इस वक्त पर ।

आज तो चिल्ला रहा संसार वन्देमातरम् ॥

जेल में चक्की घसीटूँ भूल से हूँ मर रहा ।

उस समय भी कह रहा बेजार वन्देमातरम् ॥

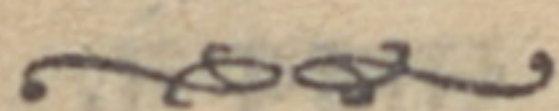
मौत के मुँह पर खड़ा हूँ कह रहा जल्लाद से ।

भोंक दे सीने में अब तलवार वन्देमातरम् ॥

डाकूरोँ ने नब्ज देखी सर हिलाकर कह दिया ।

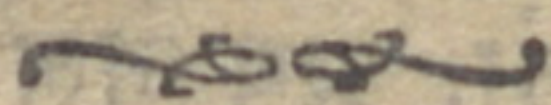
हो गया इसको तो अब आज्ञार वन्देमातरम् ॥

ईद, हं ली औ दशहरा, शुबरात से भी सौगुनी ।
 है हमारा लाड़ला त्योहार बन्देमातरम् ॥
 जालिमों का जुल्म भी काफूर सा उड़ जायगा ।
 फैसला होगा सरे दरबार बन्देमातरम् ॥



३-आरजू

जगदीश यह विनय है जब प्राण तन से निकले ।
 प्रिय देश देश रटते यह प्राण तन से निकले ॥
 भारत बसुन्धरा पर सुख शान्ति संयुता पर ।
 सश्याम श्यामला पर यह प्राण तन से निकले ॥
 देशाभिमान धरते, जातीय गान गाते ।
 निज देश व्याधि हरते यह प्राण तन से निकले ॥
 भारत का चित्र पट हो, युग नेत्र से निकट हो ।
 श्री जाह्नवी का तट हो तब प्राण तनसे निकले ॥



४-बसन्ती चोला

ये रङ्ग बसन्ती चोला,

यह रङ्ग बड़ा अनमोला ।

इसी रङ्ग में बाबा गाँधी ने,

नमक पै धावा बोला ॥

इसी रङ्ग में जवाहर लाल ने,

जेहल का फाटक खोला ।

इसी रङ्ग में तैयब जी ने,

धरसने पै धावा बोला ॥

इसी रङ्ग में सराजनी देवी ने,

भूख की शिहत भेला ।

इसी रङ्ग में पटेल साहब ने,

असंभली की गद्दी छोड़ा ।

इसी रङ्ग में पेशावर वालों ने,

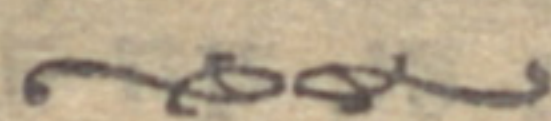
गोली खाने को सीना खोला ॥

इसी रङ्ग में शोलापुर वालों ने,

कांग्रेस कचहरी खोला ।

इसी रङ्ग में गायब होगया,

उनका तोप और गोला ॥



५-कट कट के मरना होगा

आओ वीरो ! मर्द बनो, अब जेल तुम्हें भरना होगा ।

सत्याग्रह के समर क्षेत्रमें आ आ के डटना होगा ॥

शूर लड़ाके मर्दाने हो, पैर हटाना कभी नहीं ।

मरते मरते माता का अब, कर्ज अदा करना होगा ॥

वक्त नहीं है ऐ वीरो, अब गाफिल होकर सोने का ।

दौड़ चलो मैदान में, माता का दुःख हरना होगा ॥

याद करो माता का तुमने, बहुत दूध है पान किया ।

दूध पिये की लाज बहादुर, किसी तरह रखना होगा ॥

शेर मर्द हो बीर बाँकुड़ा, याद करो कर्तव्यों का ।
मातृ वेदि पर हँसते २ कट २ के मरना होगा ॥

६-‘मर जायेंगे’

देश हित पैदा हुए हैं देश पर मर जायेंगे ।
मरते मरते देश को जिन्दा मगर कर जायेंगे ॥
हमको पीसेगा फ़लक चक्की में अपनी कब तलक ।
खाक बन कर आँख में उसकी बसर कर जायेंगे ॥
कर वही वर्ग खिजां को वादे सर सर दूर क्यों ।
पेशवाए फ़स्ले गुल हैं खुद सफर कर जायेंगे ॥
खाक में हमको मिलाने का तमाशा देखना ।
तुखम रेज़ी से नये पैदा शजर कर जायेंगे ॥
नौ नौ आँसू जो रुलाते हैं हमें उनके लिये ।
अशक के सैलाब से बरपा हशर कर जायेंगे ॥
गर्दिशे गरदाब में डूबें तो कुछ परवा नहीं ।
बहरे हस्ती में नई पैदा लहर कर जायेंगे ॥
क्या कुचलते हैं समझ कर वह हमें बर्गें हिना ।
अपने खूँ से हाथ उनके तर बतर कर जायेंगे ॥
नक़शे पा है क्या मिटाता तू हमें पीरे फ़लक ।
रहबरी का काम देंगे जो गुज़र कर जायेंगे ॥

७-देशी पहनो जी

अब देशी पहनो जी, भाइयो फैशन को छोड़ के ।
है विनती करती जी, भारत माता कर जोड़ के ॥

* शेर *

जो तुम पहनो खदर, एक पन्थ दो काज ।
एक तो पैसा घर बचे, दूजे हो भारत आजाद ॥
अब खदर पहनो जा, न बैठो मुखड़ा मोड़ के ॥अब०॥

* शेर *

जो तुम समझो खदर चुभता न बनते छैल छुबीले ।
भारतवर्ष के अन्दर कपड़े बनते रङ्ग रङ्गीले ॥
पर पहनो देशी जी लन्दन से नाता तोड़ के ॥अब०॥

* शेर *

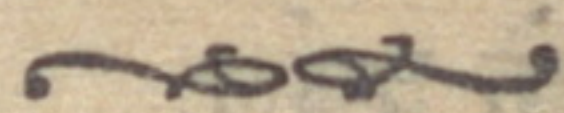
भारतवर्ष के बच्चे भूखों मरते रुदन मचाते ।
इङ्गलैण्ड के कुत्ते यारो दूध व विसकुट खाते ॥
हाय कुछ न छोड़ा जी, जालिम ले गये सब लूट के ॥अब०॥



८-गान्धी महिमा

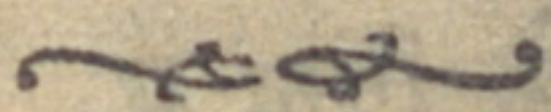
गांधी तू आज हिन्द का एक शान बन गया ।
सारी मनुष्य जातिका अभिमान बन गया ॥गांधी०॥
तू सत्य, अहिंसा, दया निस्वार्थ त्याग से ।
इस आज मर्त्यलोक में भगवान बन गया ॥गांधी०॥

तेरा प्रभाव, सादगी, हस्ती को देखकर ।
 दुश्मन भी बेजुबान हो हैरान बन गया ॥ गांधी० ॥
 तेरी नसीहतों में वह जादू का असर है ।
 जिसको लगी हवा तेरी इन्सान बन गया ॥ गांधी० ॥
 तू दोस्त है हर कौम का हर दिल अजीज है ।
 सारा जहान तेरा कदरदान बन गया ॥ गांधी० ॥
 गो हिन्द आज उठ न सके बायसे तकदीर ।
 फिर भी स्वराज लेने का सामान बन गया ॥ गांधी० ॥
 धिक्कार माधव है हमें तैंतीस कोटि को ।
 तुझसा फकीर जेल का मंहमान बन गया ॥ गांधी० ॥



६-रणभिक्षा

हम सब योधा मिलकर भाई रण भिक्षा को जाते हैं ।
 भारत माता जननि हमारी उसका कष्ट मिटाते हैं ।
 आपस में तुम लड़ना छोड़ो; प्रीति परस्पर करना सीखो,
 यह सन्देशा लाते हैं ।



१०-अरमान रह न जावे

चुन चुन के फूल लेले, अरमान रह न जावे ।
 ये हिन्द का बगीचा, गुलज़ार रह न जावे ॥
 ये वां चमन नहीं है, लेने से होवे उजड़ ।
 उलफतका जिससे कुछ भी, अहसान रह न जावे ॥ चुन०

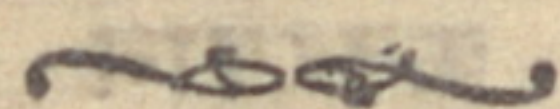
करदा जवानबंदी, जेलों में चाहे भर दो ।

माता पे होता कोई, कुरबान रह न जावे ॥ चुन ॥

छल औ फरेब से तुम, भारत का माल लूटो ।

उसके गुजर का कोई, सामान रह न जावे ॥

चुन चुन के फूल लेलो, अरमान रह न जावे ॥



११-फरियादे खुदा

इलाही तुम भी खयाल रखना,

गवाह तुमको बना रहे हैं ।

हम हिन्दवालों को पाके दुर्बल,

वो हर तरह से सता रहे हैं ॥

सुना है फरियाद पर वो देखो,

ग़ज़ब कि तीवर चढ़ा रहे हैं ।

तो सरकटाने कि आरजू में हम,

आज मक़तल में जा रहे हैं ॥

अजब है उत्साह सबके दिल में,

के लोग जेलों में जा रहे हैं ।

जो कल थे मखमल पै सोने वाले,

वो आज कम्बल बिछा रहे हैं ॥

हम हिन्दमाता का ऋण चुकाने,

को खून अपना बहा रहे हैं ।

मगर उन्हें क्या जवाब होगा,

जो तुझ पै गाली चला रहे हैं ॥

हमहिन्द मांके हैं ऐसे बच्चे,

जो जान अपनी लड़ा रहे हैं ।

औ एक भारत सुपूत वो हैं,

जो पेश डंडों से आ रहे हैं ॥

जो मेरे महफिल के बामुकाबिल,

वो गनमशीनें लगा रहे हैं ।

तो हम भी आहों कि ताकतों से,

उन्हीं की हस्ती मिटा रहे हैं ॥

फलक के नीचे से हट वो जाये,

अभी से उनको चेता रहे हैं ।

हम अपनी आहों से इस समय,

आसमां को भी डगमगा रहे हैं ॥

जो मिल के तैंतिस करोड़ भारत में,

आहों गिरियाँ मचा रहे हैं ।

ये रंजे महेशर के सोते फितनों को,

आज ही जगा रहे हैं ॥

शमा कि सूरत में दिल जलाकर,

बो लेके गुलगीर आ रहे हैं ।

जो हिन्द के हैं चिरागे रौशन,

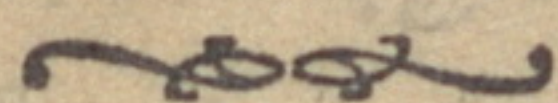
बिचारे सरको कटा रहे हैं ॥

वे जाश खाकर दमन का अपने,

जो चक्र अजहद चला रहे हैं ॥

तो अहले "शायक" स्वतन्त्रता के,

खुद अपने सर को भुका रहे हैं ॥



१२-बदला है अब जमाना

॥ भारत के शेर जागो बदला है अब जमाना ।

प्यारे वतन को इस दम आजाद है कराना ॥

मत बुजदिली को हरगिज तुम पास दो फटकने ।

आखिर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ॥भारत०॥

॥ परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं ।

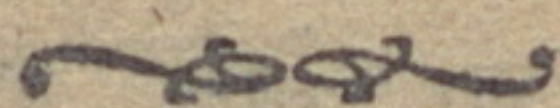
उनको हराम हैगा भारत का अन्न खाना ॥ भारत० ॥

माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित ।

वालंटियर बनो तुम सब छोड़दो बहाना ॥भारत०॥

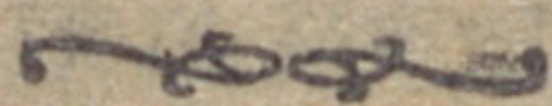
मन में भिभक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ ।

है स्वर्ग के बराबर फाँसी पर भूल जाना ॥भारत०॥



१३--गाना

जो वक्ते शिकवा खुदा से महेश्वर में रोके हम अशकवार होंगे ।
 तो सुन के भारत कि दुर्दशाओं को रंज परवरदिगार होंगे ॥
 करोगे फरियाद कैसे रोकर खुदा के हमसर बरोजे महेश्वर ।
 ये चन्द कतरे भी आँसुओं के न मिलने वाले उधार होंगे ॥
 महात्माजी को कैद रखने से आन्दोलन न दब सकेगा ।
 अभी तो तैंतिस करोड़ गाँधी इस हिन्द में आशकार होंगे ॥
 हजारों मोती के होंगे जौहर और लाखों होंगे जमा जवाहर ।
 औ मरने वाले वतन पै अपने करोड़ों क्या बेशुमार होंगे ॥
 तुम्हारे तीरे सितमको मेहमां बनाके दिलमें जा रख रहे हैं ।
 ये मेरी आहों में हो के शामिल तुम्हारे सीने के पार होंगे ॥
 गजब में आकर न बदलो तीवर चला के खंजरभी आजमालो ।
 कसम खुदा की ये सच ही मानों ज़रा न हम बेकरार होंगे ॥
 जो कत्ल करने की है तमन्ना तो ये भी दिल में खयाल रखना ।
 हमारे खूँ के हर एक कतरे स्वराजे उम्मीदवार होंगे ॥
 हमारे भारत के बच्चे बच्चे बड़ा के उत्साह कह रहे हैं ।
 के हिन्दमाता के कदमों में सर चढ़ा के हम जाँ निसार होंगे ।
 जो छोटे बच्चों के नर्म दिल में भी गोलियों को चुभा रहे हो ।
 तुम्हारे सीने में चुभने वाले हजारों बिच्छू के आर होंगे
 बने हैं जांबाज हम भी "शायक" बचके जिवहा भी देख लेना ॥
 के जेरे खज्जर भी जानशीनों के सर ये बीसों हजार होंगे ॥



१४--सरफरोशी की तमन्ना

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ।

देखना है जोर कितना बाजुर कातिल में है ॥

रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।

लज्जते सहराना वरदी दूरिये मज्जिन में है ॥ सर० ॥

वक्त आने दे बतायेंगे तुम्हे ऐ आसमाँ ।

हम अभी से क्या बताये' क्या हमारे दिल में है ॥सर०॥

आज मकतल में ये कातिल कह रहा था बारबार ।

क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है ॥सर०॥

ऐ शहीदे मुल्क मिललत में तेरे ऊपर निसार ।

अब तेरी महफिल की चरचा गैरकी महफिल में है ॥ सर० ॥

फिर क्या चाहते हैं

बतायें तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं ।

गुलामी से होना रिहा चाहते हैं ॥

फकत इस खता के सज़ावार हैं हम ।

की दर्दे वतन की दवा चाहते हैं ॥

बुरा चाहते हैं जो हम बेकसों का ।

हम उनका भी दिलसे भला चाहते हैं ॥

गरीबों को तेरा ही बस आसरा है ।

निगाहें करम या खुदा चाहते हैं ॥

इस उजड़े हुए गुलशने हिन्द को फिर ।

हरा और फूला फला चाहते हैं ॥

घड़ा पाप का गालिबन भर चुका है ।

जमाने से ज़ालिम मिटा चाहते हैं ॥

वतन पर दिलाजान कुरबान करके ।

जो मर कर भी आवे वफा चाहते हैं ॥

समाप्त



— १५ —

पुष्पाङ्कुर चित्रकला

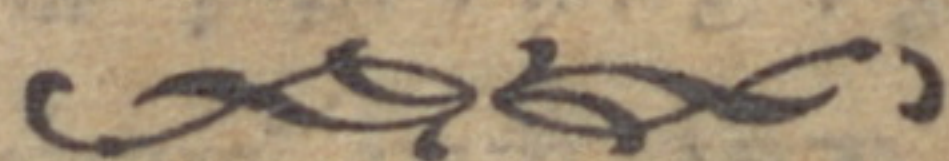
मथुराप्रसाद गुप्त द्वारा

श्रीयन्त्रालय, सत्तीचौतरा, बनारस में मुद्रित ।

देश की मर्यादा !

(४३) देश की स्वाधीनता !!

सूत कातने की तकली



आप लोगों को विदित हो कि हमारे कारखाने में हर किस्म की सूत कातने की तकली काठ की तथा पीतल की $\approx$) आने दर्जन से लेकर दो रुपये दर्जन तक की तकली बनती है, इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय नेताओं के बैज और देशी निशान, खहर के तिरंगे फूल हर वक्त तैयार मिलते हैं। जिन महाशयों को जरूरत हो नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें या स्वयं आकर देखें।

पता—

भारत तकली कार्यालय,

दीनानाथ का गोला, बनारस सिटी।

प्रोप्राइटर—रामचन्द्र बेनीराम अग्रवाल